GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

धर्म - भारत की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक एकता का स्त्रोत

आरती सिंह

हिन्दी

रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

शोध सार

धर्म एक पवित्र अनुष्ठान भर है, चेतना का शुद्धिकरण होता है। धर्म मनुष्य में मानवीय गुणो के विचार का स्त्रोत है, जिसके आचरण से वह अपने जीवन को चीरत्रार्थ कर पाता है। मानवता के लिए न तो पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता होती है और न ही भावना की, बल्कि सेवा भाव तो मनुष्य के आचरण में होना चाहिए। धर्म का उद्देश्य, केवल मानव को ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि को अक्षय सुख उपलब्ध करवाने का मार्ग प्रशस्त करना है। मानव के जीवन के अनुकूल, सुख भी एक पड़ाव मात्र है, लक्ष्य तो निश्चित ही शाश्वत सूख है । सभी जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता। इसलिए जियो और जीने दो का सिद्धांत अस्तित्व में आया है। शान्ति से जीने और अन्य को भी जीने देने के उद्देश्य से ही सभ्यता और संस्कृति का विकास हासिल किया गया है। क्योंकि सभ्यता और संस्कार से हम भी आनंद पूर्वक जीते है, और अन्य सभी प्राणियों के लिए भी सहज आनंद के अवसर उपल्बध करवाते है। धर्म एक मार्गदर्शक है , गुरु है, अंधे की आंख, कमजोर की लाठी, ताकतवर का डर और ज्ञानियों का ज्ञान है जो उन्हें सही राह पर चलना सीखाता है। लेकिन मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक अहंकार, लोभ, अभिमान और मोह के बंधन में बंध रहता है। इसलिए मनुष्य मे मनुष्यता को बनाए रखने के लिए धर्म की आवश्यकता है।

धर्म का तात्पर्य मानव समाज से परे अलौकिक शक्ति पर विश्वास से है, जिससे पवित्रता, भक्ति, श्रद्धा, भय आदि तत्व सम्मिलित होते है। जिन्हें हम साधारण शब्दो में धर्म कहते है। जो हमे धर्म से अध्यात्म की ओर ले जाता है।

कीवर्ड: *आध्यात्मिक, संस्कृति, उपनिषद, ब्रह्माण्ड, भावना, सामर्थ्य, अनंत, धर्म,परमात्मा, अंतर्यात्रा, रीति-रिवाजो, व्युत्पत्ति, नैतिक संहिता, श्रद्धा, पुर्नजन्म, पुण्यकर्म*

भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक आधार

संसार की समस्त संस्कृतियों में भारत की संस्कृति ही प्राचीनतम है। आध्यात्मिक प्रकाश संसार को भारत की देन है। गीता, उपनिषद् पुराण इत्यादि श्रेष्ठतम मस्तिष्क की उपज है। हमारे जीवन का संचालन आध्यात्मिक आधारभूत तत्वो पर टिका हुआ है भारत में खाना-पान, सोना बेठना, शोच-स्नान, जन्म-मरण, यात्रा, विवाह, तीज-त्यौहार आदि उत्सवो का निर्माण भी अध्यात्मिक बुनियादों पर है। जीवन का ऐसा कोई भी पहलू नहीं है, जिसमें आध्यात्म का समावेश न हो, या जिस पर पर्याप्त चिन्तन या मनन न हुआ हो।

भारतीय संस्कृति मनुष्य मात्र को क्या, संसार के प्राणीमात्र और अखिल ब्रह्माण्ड तक को भगवान का विराट् रुप मानती है। भगवान इस विराट में आत्म रुप होकर प्रतिष्ठित है और विश्व के समस्त जीव-जन्तु, प्राणी, स्थावर जंगम उसमें स्थिर है। वे अंग है और ये सब अंग जीवन के अंत तक सब में यह भावना समाविष्ट रहे, एक मात्र इसी के लिए योग्यता, बुद्धि, सामर्थ्य के अनुसार अनेक कर्तव्य निश्चित है। कर्तव्यों में विभिन्नता होते हुए भी प्रेरणा में समता है, एक निष्ठा है, यह उद्धेश्य है और यह उद्धेश्य ''आध्यात्म'' कहलाता है।

अनंत आनन्द का स्त्रोत है आध्यात्मिक

आध्यात्मिक होने का अर्थ है कि व्यक्ति अपने अनुभव के धरातल पर यह जानता है कि वह स्वयं अपने आनंद का स्त्रोत है। आध्यात्मिकता का संबंध मनुष्य के आंतरिक जीवन से है, और इसकी शुरुआत होती है - उसकी अंतर्यात्रा से। वे सभी गतिविधियाँ, जो मनुष्य को परिष्कृत, निर्मल बनाती है, आनन्द से भरपूर करती हे, पूर्णता का एहसास देती है - वे सब आध्यात्म के अन्दर आती है। ज्ञानजीवन कहते है कि शुन्य में विराट समाया है और इस विराट में भी शून्य है। जो इस शरीर में रहकर ही परमात्मा के इस विराट रुप को समझ पाता है, उसे अनुभव कर पाता है, वही आध्यात्मिक है।

धर्म और संस्कृति

धर्म और संस्कृति के बीच संबंध को परिभाषित करने के कई तरीके है। धर्म को एक विश्वास प्रणाली के रुप में देखा जा सकता है, जो जीवन जीने के तरीके को आकार देता है। दूसरी ओर, संस्कृति जीवन का वह विशेष तरीका है जिसे लोगों का एक समूह जीता है। इसमें भाषा और रीति रिवाजों से लेकर खान-पान और पहनावे तक सब कुछ शामिल है। तो एक अर्थ में धर्म संस्कृति को आकार देता है, और संस्कृति धर्म को आकार देती है।

''धर्म'' शब्द की व्युत्पत्ति से ही विराट की एकतानता का भाव स्पष्ट हो जाता है। जो वास्तविकता, है, उसी को धारण रखना धर्म है।

धर्म और अध्यात्म

'रिलीजन' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द रेलिगेयर से हुई है, जिसका अर्थ है ईश्वर के साथ पुनः जुड़ना। हममें से बहुत से लोग स्वयं को किसी विशेष धर्म से जोड़ते है, आमतौर पर हमारे जन्म की परिस्थितियों के परिणाम-स्वरुप। जबकि धर्म हमें ईश्वर, या एक उच्च शक्ति के विचार से परिचित कराते है, और जब वे एक बुनियादी नैतिक संहिता को स्थापिता करने का काम करते है, उनकी सदस्यता लेने वाले कई लोग आध्यात्मिक रुप से अतृप्त महसूस करते है और अपने जीवन में उद्धेश्य की कमी से निराश होते है। इसलिए व्यक्तिगत धर्मा से परे देखना आवश्यक हो जाता है।

शांति और सुख की खोज व्यक्ति धर्म से करता है

प्रत्येक धर्म अपने मार्ग अनुसार ज्ञान प्रदान करता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। धर्म एक श्रद्धा और मान्यता है। यह हमें बुरी चीजों को छोड़कर अच्छी चीजों को अपनाना सिखाता है क्योंकि कुदरत का नियम ऐसा है कि जब कोई बुरे कर्म करता है, उसका पाप कर्म बाँधते है, जो उसे दुःखी करता है, अगर कोई अच्छे कर्म करता है, तो वह पुण्य कर्म को बाँधते है जिससे उसे खुशी देता है।

जब कोई व्यक्ति कुछ करना चाहता है और किस भी कारण से उसे करने मे विफल हो जाता है तब स्वाभाविक रुप से उसके भीतर तुरंत ही बहुत डर और घबराहट हो जाती है, जो उसे

https://www.gapbhasha.org/

बहुत बेचैन करती है।
अच्छे कर्म करने से निस्संदेह पुण्य कर्म बंधते है। लेकिन इन पुण्य कर्म का फल भोगने के लिए पुनर्जन्म लेना होगा और फिर से इस दुनिया मे आना होगा। जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया बहुत दर्दनाक है और अपने पुण्य कर्म के फल का आनंद लेने के लिए जीव को दुःख से गुजरना ही पड़ता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: संस्कृति, धर्म और आध्यात्मिकता हमारे जीवन के सभी महत्वपूर्ण पहलू है। वे हमें हमारी विरासत से जुड़ने, हमारी मान्यताओं को व्यक्त करने और हमारे जीवन मे अर्थ खोजने में मदद कर सकते है। हालाँकि, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम में से प्रत्येक एक व्यक्ति है और हमें दूसरों की मान्यताओं का सम्मान करना चाहिए। हमें नई संस्कृतियों और धर्मो के बारे मे सीखने और अपनी आध्यात्मिकता की खोज के लिए भी खुला रहना चाहिए। ऐसा करके हमअपने जीवन और अपने आस-पास के लोगो के जीवन को समृद्ध बना सकते है।

संदर्भ

[1] आध्यात्मिक आर्टिकलस:- आध्यात्मिकता और धर्म
[2] भारती संस्कृति का आध्यात्मिक आधार:- डॉ. रामचरण महेन्द्र एम.ए.
[3] भारतीय संस्कृति का मूल आधार:- श्री शिव प्रकाश
[4] भारतीय धर्म और अध्यात्म:- जुलाई 2022 करंट अफेयर्स ई-बुक
[5] स्हज मार्ग:- श्री राम चंद्र मिशन

https://www.gapbhasha.org/